आधुनिक शिक्षा व्यवस्था - मारवाड़ के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. बलवीर चौधरी

सह आचार्य (इतिहास)
राजकीय महाविद्यालय जोधपुर

मध्यकाल में हिन्दुओं के लिए प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र मन्दिरों में हुआ करते थे इन विद्यालयों में प्रादेशिक भाषाओं एवं संस्कृत का अध्ययन करवाया जाता था। प्रारम्भ में गणित में पहाड़े जोड़–बाकि गुणा–भाग आदि अनिवार्य रूप से सिखाया जाता था।[1] मुस्लिमों के लिए मदरसा शिक्षा के केन्द्र थे जहां धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। कभी–कभी शासक वर्ग के लोग इन शिक्षण संस्थाओं एवं विद्वानों को जमीन दान में देते थे।[2]

1818 ई. में राजपूताना के शासकों ने अंग्रेजो के साथ सहायक संधियां कर रखी थी उसी समय ईसाई मिशनरियों का राजपूताना में प्रवेश हुआ उन्होंने यहां आधुनिक शिक्षा का प्रचलन शूरू किया था। राजपूताना में सर्वप्रथम अजमेर एवं पुष्कर में पादरी जावेज ने स्कूल खोले।[3] उस समय मारवाड़ राज्य के शासक मानसिंह थे जो ब्रिटिश राज्य के विरोधी थे इस कारण अंग्रेजी शिक्षा का प्रश्रय नहीं दिया।
1835 ई. में लार्ड मेकाले द्वारा भारत में अंग्रेजी शिक्षा को माध्यम बनाया। तत्पश्चात् राजपूताना के पोलिटिकल एजेन्टों ने अंग्रेजी माध्यम लागू करने के लिए शासकों को प्रोत्साहित किया। राजपूताना रियासतों में सर्वप्रथम अलवर के शासक बन्नेसिंह ने अपने यहां 1842 ई. में एक विद्यालय की स्थापना की।[4] जोधपुर राज्य में 1844 ई. में कर्नल आर. एस. फ्रेंच पोलिटिकल एजेन्ट बनकर आया– उन्होंने शिक्षा में रूचि दिखाई एवं महाराजा तखतसिंह को इनके लिए प्रोत्साहित किया। महाराजा ने विद्याशाला नाम से एक पाठशाला प्रारम्भ की[5] परन्तु यह विद्यालय शहर से दूर होने के कारण यहां कोई विद्यार्थी ने प्रवेश नहीं लिया था। 1863 ई. में पोलिटिकल एजेन्ट के निर्देशानुसार महाराजा ने विद्यार्थियों का आवागमन हेतु बग्घियाँ चलाई[6] फिर भी उस समय मारवाड़ के जन–साधारण वर्ग शिक्षा क्षेत्र में रूचि नहीं ले रहा था।
सन् 1863 ई. में जोधपुर राज्य में निक्शन ने अपनी रिपोर्ट में चौरानवें पाठशालाओं के बारे में उल्लेख करता है ये सभी पाठशालाएँ निजी थी इसमें दो हजार चार सौ छियानवें छात्र अध्ययन करते थे।[7] पोलिटिकल एजेन्ट की देखरेख में कुछ देशी शिक्षण शालाएँ मालानी परगने के अन्तर्गत बाड़मेर एवं जसोल में चल रही थी। 1868 ई. में यहाँ विद्यार्थियों की संख्या करीब एक सौ थी।[8]

1 अप्रेल 1867 ई. में महाराा तखत सिंह के पुत्र रावराजा मोतीसिंह व मणिहार रतनलाल के प्रयत्नों से एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की जिसमें पन्द्रह विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया।[9] 10 जुलाई 1869 ई. को इस विद्यालय का राज्य ने अपने अधिकार में कर इनका नाम दरबार स्कूल रखा तथा सन् 1876 ई. में इस विद्यालय को हाई स्कूल बना दिया गया था।[10]

1870 ई. में मारवाड़ राज्य में नौ परगनों में जिसमें बाली, बिलाड़ा, जसवन्तपुरा, मारोठ, पचपद्रा, सांभर, जैतारण, नावा और सिवाना में वर्नाक्यूलर स्कूल खोले गए।[11] सन् 1881–82 ई. मारवाड़ राज्य में विद्यालयों की संख्या बढ़कर अठारह हो गई थी। एवं राज्य सरकार उक्त विद्यालयों पर[12] करीब दस हजार रूपये प्रति वर्ष खर्च करती थी। सन् 1890–91 ई. में दरबार ने शिक्षा पर कुल चौबीस हजार छः सौ अड़तिस रूपये व्यय किये थे।[13] इस वर्ष राज्य की आय उन्नपच्चास लाख तेरह हजार आठ सौ पिच्चासी रूपये थी।[14] शिक्षा पर कुल आय का 0.50 प्रतिशत तथा व्यय का 0.45 प्रतिशत खर्च होता था। जनसंख्या[15] के आधार पर मारवाड़ राज्य में केवल 0.66 प्रतिशत पुरुष एवं 0.03 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करती थी। इस प्रकार इस समय शिक्षा का विकास नगण्य था।

मारवाड़ में महिला शिक्षा का अभाव था। सामाजिक कुरूतियों आर्थिक कारण एवं महिलाओं के अलग से विद्यालय नहीं होने के कारण महिलाएँ शिक्षा से वंचित थी। यहाँ सर्वप्रथम इनके पृथक विद्यालय की स्थापना 1886 ई. में की थी जिनका नाम ह्यूसन बालिका विद्यालय रखा। तत्पश्चात् 1925–26 में जालोरी गेट में बालिका विद्यालय व 1928 ई. में मेड़ती दरवाजा में मोहम्मडन बालिका स्कूल प्रारम्भ किया। दो बालिका स्कूल उम्मेद कन्या पाठशाला व सुमेर स्कूल तथा परगना में बालिका स्कूलों को सरकारी अनुदान दिया गया था।[17]

प्रारम्भ में ही मारवाड़ में जातीय आधार पर शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जाने लगी। सन् 1875 ई. में राजपूत पावलेट नॉबेल स्कूल की स्थापना जागीरदारों के बच्चों के लिए की गई।[18] 1887 ई. में कायस्थों ने सरप्रताप स्कूल[19] तत्पश्चात्

मालियों ने सुमेर स्कूल, श्रीमाली ब्राह्मणों ने शिवबाड़ी स्कूल, पुष्करणा ब्राह्मणों ने सुमेर पुष्टिकर स्कूल तथा ओसवालों ने सरकार स्कूल की स्थापना की। इनमें सरप्रताप ने बड़ा योगदान दिया एवं जब 1902 ई. में सरकारी अनुदान प्रणाली का प्रारम्भ हुआ तो इन स्कूलों को सरकारी अनुदान दिया जाने लगा। सन् 1886 ई. में सर प्रताप ने गरीब राजपूत छात्रों के लिए एल्गिन राजपूत स्कूल बनाई थी।[20] तत्पश्चात् 1912 ई. में यूरोपियन प्रिंसीपल आर. बी. वानवार्ट के निर्देशन में चौपासनी में स्कूल खोला जिसका 1914 में लार्ड हार्डिंग ने उद्घाटन किया एवं इस विद्यालय को हाई–स्कूल बना दिया गया।[21] जातीय आधार पर मारवाड़ में ब्राह्मण सबसे अधिक शिक्षा प्राप्त करते थे। साथ ही राजपूत, कायस्थ व महाजन जाति के लोगों की संख्या विद्यालयों में अधिक थी। इन विद्यालयों में किसान वर्ग एवं निम्न वर्ग के बालकों की संख्या नगण्य थी और न ही राज्य की ओर से इनके लिए कोई पृथक विद्यालयों की स्थापना की थी।

जोधपुर में कॉलेज की स्थापना 1893 ई. में महाराजा जसवन्त सिंह ने की थी। यह इलाहाबाद वि. वि. से सम्बद्ध था। इनका नाम महाराजा के नाम पर जसवन्त कॉलेज रख दिया गया।[22]
बीसवीं शताब्दी में शिक्षा की स्थिति में परिवर्तन आने लगा। सन् 1904 ई. में भारत सरकार ने एफ. एल. रीड़ के निर्देशन में राजपूताना में शिक्षा के विकास के लिए एक आयोग नियुक्त किया। इन्होंने मारवाड़ की शिक्षा की दयनीय स्थिति पर चित्रण किया एवं सुझाव दिया कि सम्पूर्ण राज्य में एक ही प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए।[23]

सन् 1911–12 ई. में मारवाड़ राज्य में शिक्षा सुधार हेतु एच. टी. नॉल्टन (शिक्षा विशेष पंजाब) की जागीरदारों द्वारा शिक्षा में रुचि नहीं लेने पर चिन्ता जताई तथा सरकार द्वारा इनको शिक्षा के विकास हेतु प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए।[24] सन् 1920 ई. में जोधपुर राज्य में अस्सी सरकारी विद्यालय थे एवं उनीस प्राइवेट अनुदान प्राप्त शिक्षण संस्थाएँ थी। सन् 1921–22 ई. में राज्य सरकार द्वारा शिक्षा पर अपनी आय का 1.14 प्रतिशत व्यय करता था।[25] जबकि जयपुर में 3.20 प्रतिशत[26], भरतपुर में 2.41 प्रतिशत[27] एवं अजमेर–मेरवाड़ा में 8.10 प्रतिशत[28] शिक्षा पर धन राशि खर्च करते थे। इस प्रकार जोधपुर रियासत अन्य राजपूताना की प्रमुख रियासतों से शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी हुई थी।
महाराजा उम्मेदसिंह के शासनकाल में जोधपुर राज्य में शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ था। उन्होंने जागीरदारों को निर्देश दिए कि जिन गांवों की जनसंख्या दो हजार है। वहाँ प्राथमिक विद्यालय खोले जाए।[29] दरबार इन क्षेत्रों के लिए एक लाख रु0 व्यय करेगा। सत्रह जागीरदारों ने अपने जागीर क्षेत्र में प्राथमिक स्कूल खोलने की कार्यवाही शुरू की।[31] सन् 1928–29 ई. तक जोधपुर राज्य में विद्यालयों की संख्या एक सौ चवालिस थी एवं विद्यार्थियों की संख्या दस हजार के लगभग थी।[32]

शिक्षक प्रशिक्षण संस्था भी खोली गई थी।[33] सन् 1934–35 ई. में शिक्षा विभाग ने विभिन्न स्कूलों में व्यावसायिक एवं प्रावधिक शिक्षा लागू की विद्यार्थियों को सिलाई–कृषि का कार्य, बढ़ई एवं चमड़ा के कार्य सिखनें हेतु अध्यापकों की नियुक्त की गई थी।[34] महिलाओं को लिखाई–पढ़ाई के साथ चित्रकला, सिलाई, रंगाई–छपाई, हाथ–करघा उद्योग एवं रेडक्रॉस का कार्य आदि सिखाया जाने लगा।[35]
सन् 1940–41 ई. में जोधपुर राज्य में 269 शिक्षण संस्थाएँ थी, जिसमें 223 लड़कों के लिए एवं 46 लड़कियों के लिए थी।[36] जो बढ़कर सन् 1945–46 ई. में 306 हो गई थी, जिसने लड़कों हेतु 255 तथा लड़कियों हेतु 51 शिक्षण संस्थाएँ थी।[37] सन् 1931–32 से 1946–46 ई. तक जोधपुर राज्य ने अपनी आय को औसतन 5.03 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किए थे।[38]

सन्दर्भ

1. श्रीवास्तव, ए. एल.: मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृष्ठ संख्या : 98
2. पो. क. 13 नवम्बर, 1939, नं. 20; शर्मा, कालूराम : उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, जयपुर 1974, पृष्ठ संख्या : 135
3. गहलोत, जगदीश सिंह : राजस्थान का सामाजिक जीवन, पृष्ठ संख्या : 54
4. श्यामलदास, वीर विनोद, पृष्ठ संख्या : 1363
5. फोरियन पोलिटिकल : अगस्त 7, 1947 नं. 847; गहलोत, जगदीश सिंह : पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या : 320
6. दवे, आर. के. : सोसाइटी और कलचर ऑफ मारवाड़, 1995, पृष्ठ संख्या : 117
7. पो. के. 'ए' जुलाई 1864 नं. 10–18 जोधपुर एजेन्सी रिपोर्ट पैरा 14
8. अर्सकाईन, के. डी., राजपूताना गजेटियर्स भाग–III-ए, पृष्ठ संख्या : 166
9. मुंशी, हरदयालसिंह : रिपोर्ट इंतिजाम राज मारवाड़, जोधपुर, 1891, पृष्ठ संख्या : 801; मेहता, सी.के. : आउटलाइन हिस्ट्री ऑफ दि दरबार हाई स्कूल जोधपुर 1938, भाग1 पृष्ठ संख्या : 1
10. मेहता, सी.के. , पूॅर्वाक्त भाग 1 , पृष्ठ संख्या : 16

11. शाह, पी.आर. : राज मारवाड़ ड्यूरिंग ब्रिटिश पैरामाउंटशी, पृष्ठ संख्या : 166, 1982
12. वही।
13. मा.ए.रि. 1890–91 पृष्ठ संख्या : 113
14. वही, पृष्ठ संख्या : 114
15. सन् 1890–91 में मारवाड़ राज्य की जनसंख्या 1338308 पुरुष व 1197985 महिलाएँ थी।
16. अर्सकाई : पूर्वोक्त भाग–III-ए, पृष्ठ संख्या : 167
17. मा.ए.रि. सन् 1928–29 पृष्ठ संख्या : 50
18. शाह पी. आर. : पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या : 174
19. रेऊ : मारवाड़ का इतिहास भाग 2, पृष्ठ संख्या : 496
20. वही,
21. मा.ए.रि. सन् 1913–14 पृष्ठ संख्या : 74
22. मा.ए.रि. सन् 1895–96 पृष्ठ संख्या : 94
23. रिपोर्ट ऑन दी प्रोगेस ऑफ एज्यूकेशन पत्र नं. 4402 आई. ए. डी. दिसम्बर 9 1904, भारत सरकार से ए.जी.जी. को
24. नॉल्टन, एच. टी. : रिपोर्ट ऑन दी कन्डीशन ऑफ एज्यूकेशन इन दी जोधपुर स्टेट (1914), पृष्ठ संख्या : 5–6
25. मा.ए.रि. सन् 1920–21 पृष्ठ संख्या : 81
26. रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जयपुर स्टेट, पृष्ठ संख्या : 106, सन् 1920–21
27. रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ भरतपुर स्टेट, सन् 1920–21
28. रिपोर्ट ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ अजमेर–मेरवाड़, पृष्ठ संख्या : 82, सन् 1920–21
29. मारवाड़ गजट (असाधारण) ख 8 सं. 17, जनवरी, 27, 1923
30. मा.ए.रि. सन् 1923–24 पृष्ठ संख्या : 62–63
31. फाइल सं. 22 सी/3/36 भाग–I से नवम्बर 12, 1929 तक
32. माथुर सर्वोत्तम : महाराजा उम्मेदसिंह आधुनिक मारवाड़ के निर्माता : जोधपुर 1998, पृष्ठ संख्या : 85
33. वही, पृष्ठ संख्या : 86
34. वही, पृष्ठ संख्या : 88
35. वही, सन् 1935–36, पृष्ठ संख्या : 75
36. वही, सन् 1940–41, पृष्ठ संख्या : 76
37. वही, सन् 1945–46, पृष्ठ संख्या : 97–98
38. वही, सन् 1930–31 से सन् 1946–47 तक